

<b>The</b>	<b>7</b>
<b>title page</b>	<b>7</b>
<b>Dedication</b>	<b>9</b>
<b>Gratitude</b>	<b>12</b>
<b>Reviews</b>	<b>14</b>
<b>पुस्तक के विषय में</b>	<b>24</b>
<b>मंगलाचरण</b>	<b>27</b>
<b>Chapter 1 . परिक्रमा- तत्त्व</b>	<b>32</b>
<b>The first text after the chapter heading styled h2 and toc 2</b>	<b>34</b>
<b>परिक्रमा भगवान के शुद्ध प्रेम को प्रदान करता है</b>	<b>36</b>
<b>परिक्रमा का अर्थ और उसका महत्व</b>	<b>36</b>
<b>भगवान् का स्मरण</b>	<b>37</b>
<b>भगवान् का स्मरण आध्यात्मिक भावनाओं को जागृत करता है</b>	<b>40</b>
<b>भगवान् के लीला स्थलियाँ आध्यात्मिक भावनाओं को कैसे जागृत करती हैं</b>	<b>41</b>
<b>आध्यात्मिक उत्तेजनाओं की धारणा विकसित करने का महत्व</b>	<b>45</b>
<b>पवित्र स्थान के साथ कैसे लय मिलाए</b>	<b>50</b>
<b>Ch -2</b>	<b>54</b>
	<b>54</b>
<b>Title of Ch2</b>	<b>54</b>
<b>एकचक्रा: महत्व, भौगोलिक स्थिति और इतिहास</b>	<b>56</b>
<b>एकचक्रा की कृपा</b>	<b>58</b>
<b>एकचक्रा का भाव</b>	<b>62</b>
<b>"एकचक्रा " नाम का इतिहास</b>	<b>63</b>
<b>कृष्ण अपने भक्तों की रक्षा करते हैं</b>	<b>63</b>
<b>दिव्य चक्र</b>	<b>68</b>
<b>Chapter -3</b>	<b>72</b>
	<b>72</b>
<b>श्री Title of Ch3</b>	<b>72</b>
<b>भगवान नित्यानंद के प्रकट होने के अंतरंग और बाह्य कारण</b>	<b>73</b>
<b>भगवान नित्यानंद की महिमा और उनकी विभिन्न अभिव्यक्तियाँ</b>	<b>77</b>
<b>भगवान नित्यानंद के चरण कमल</b>	<b>82</b>
<b>भगवान नित्यानंद के चरणों में ध्यान करने का लाभ</b>	<b>82</b>
<b>भगवान नित्यानंद के चरण कमलों पर चिह्नों की व्याख्या</b>	<b>83</b>
<b>वैष्णव आचार्य के गीतों में भगवान नित्यानंद की कृपा की महिमा</b>	<b>88</b>
<b>नित्यानंद-निष्ठा</b>	<b>88</b>
<b>दललेर-गीत</b>	<b>92</b>
<b>श्री नित्यानंद-अष्टकम</b>	<b>95</b>
<b>श्री गौरा-नित्यानंद-दया</b>	<b>98</b>
<b>भाग -4</b>	<b>102</b>
<b>एकचक्रा के पवित्र स्थल</b>	<b>102</b>
<b>इस्कॉन मंदिर — एकचक्रा -चंद्रोदय-मंदिर</b>	<b>103</b>

नित्यानंद-जन्मस्थान - भगवान नित्यानंद का प्राकट्य स्थान	108
ज्योतिषियों की भविष्यवाणी	108
भगवान नित्यानंद का प्राकट्य	109
गर्भ-वास (सूतिका मंदिर)	111
हडाई पंडित और पद्मावती-देवी का घर	114
नित्यानंद का बाल्यावस्था की लीला	119
नित्यानंद की किशोरावस्था	124
निताई एकचक्रा छोड़ते हैं 10)	126
निताई से विरह में 11)	127
विश्वरूप -ताल (सन्यासी -ताल, माल -ताल)	129
वृक्ष को विश्वरूप- ताल क्यों कहा जाता है	129
नित्यानंद और विश्वरूप	129
पेड़ को सन्यासी-ताल क्यों कहा जाता है	130
"मुझे आपका बेटा चाहिए!"	130
नित्यानंद ने अपने माता-पिता का घर क्यों छोड़ा?	133
मिलन और वियोग— प्रेम की नदी के दो तटबंध	134
निताई से वियोग होना ही उनके और गौरांग के साथ वास्तविक मिलन है	135
वह संन्यासी कौन था?	136
पेड़ को माला -ताल क्यों कहा जाता है	139
षष्ठी -ताल	140
निताई -कुण्ड	141
श्री मंदिर (निताई -गौर मंदिर)	141
चंदन -सरोवर (चरली- कुण्ड)	146
पद्मावती -कुण्ड	148
बकुल-ताल (नाड़ी - पोता)	150
शिला-कुण्ड (सुलगोरे -कुण्ड)	152
श्री चैतन्य-सरस्वता- कृष्ण-अनुशीलन-संग	155
हाँटू -गाड़ा (जाहुन-कुण्ड)	156
कनाई -कुंड	159
पांडव -ताल	161
पांडव एकचक्रा आते हैं	161
भीम ने राक्षस बका का वध किया	164
पांडवो ने द्रौपदी के प्राकट्य के बारे में जाना और उसके स्वयंवर में गए	173
बलराम ने कलियुग में युधिष्ठिर को अपनी प्राकट्य की भविष्यवाणी की	177
एकचक्रा में पांडवो के प्रवास और कुरुक्षेत्र की लड़ाई के बीच संबंध	178
इंद्र-सयोर (बड़ा और छोटा)	184
कुण्डू-पुकुर	184
विश्राम ताल	186
यमुना नदी (मौदेश्वर)	190
घाट कदम्ब-खण्डी यमुना पर	192
भांडीश्वर (एकचक्रेश्वर) महादेव मंदिर	195

गोष्ठ -ताल	197
भगवान जगन्नाथ का मंदिर	199
इमली-तला (तेंतुली -तला)	202
श्वेत-गंगा	203
वीरचंद्रपुर और वीरभद्रपुर	205
श्री वीरभद्र प्रभु एकचक्रा में	205
वीरभद्र गोसाँई की महिमा	205
बंकिम -राय का मंदिर *19)	208
बांका -राय, नितार्ई के छोटे भाई	208
बांका -राय की लीलाएं	208
विष्णु का चतुर्भुज रूप धारण करते हुए बांका राय	208
बांका -राय का अप्रकट होना	209
बंकिम -राय मंदिर के बारे में	212
पद्मा -ताल	218
रास -स्थली	219
श्याम-कुण्ड	225
राधा-कुण्ड (राय-कुण्ड)	227
गोवर्धन	231
कालिया -दह	233
<b>भाग 5</b>	<b>236</b>
<b>एकचक्रा के आसपास पवित्र स्थान</b>	<b>236</b>
मयूरेश्वर में पवित्र स्थान	237

निताई -मामा-बाड़ी (पद्मवती-देवी का घर)  
मयूरेश्वर शिव  
कुण्डल -तला

237  
238  
239  
242

द्वीपर युग का एक विशाल कोबरा	242
कोटासुर के पवित्र स्थान	243
	245
	245
कोटासुर	245
मदनेश्वर शिव	246
<b>भाग 6</b>	<b>248</b>
<b>महान वैष्णव एकचक्रा में आगमन</b>	<b>248</b>
एकचक्रा में जाह्नवी-देवी	249
एकचक्रा में नरोत्तम दास ठाकुर	254
नरोत्तम की पहचान	254
एकचक्रा की तीर्थयात्रा	254
<b>भाग 7</b>	<b>258</b>
<b>एकचक्रा छोड़ने के बाद नित्यानंद की लीलाएं उनके प्रचार आंदोलन की शुरुआत करने तक</b>	<b>258</b>
भगवान नित्यानंद के पवित्र स्थानों की यात्रा	259
भगवान नित्यानंद श्री लक्ष्मी-पति से मिलते हैं और उनसे दीक्षा प्राप्त करते हैं	261
भगवान नित्यानंद का श्री माधवेन्द्रपुरी और ईश्वर पुरी से मिलन	264
नित्यानंद की तीर्थयात्रा का अंत	266
वृन्दावन से भगवान चैतन्य से मिलने के लिए	268
ईश्वर पुरी के साथ एक और मिलन — एक आंदोलन की शुरुवात के लिए अंतिम शब्द	269
श्री नित्यानंद और श्री चैतन्य की अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाओं का संक्षिप्त सारांश	270
ग्रन्थसूची	270
निर्देशांक द्वारा मानचित्र पर पवित्र स्थानों की खोज करें	271
कचक्रा के आसपास के पवित्र स्थानों के बीच में दुरी	273
एकचक्रा के पवित्र स्थानों का नक्शा	274
लेखक के विषय में	275